NAME - ANUP KUMAR
CLASS - B.Ed I year.
SESSION - 2022-24
ROLL NO - 220042
Date - 28/02/23

COURSE - 1
COURSENAME - Childhood and Growing up.
F.M - 16
TIME - 40 min.

15/16
01/03/23

Q1.

Q.1 Define the concept of childhood and explain 'Jean Piaget' cognitive development theory.

Q1. बाल्यावस्था की अवधारणा को स्पष्ट करें और जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत की व्याख्या करें।

ANS:- बच्चे के जन्म से छः वर्ष तक का काल बचपन कहलाता है। बचपन में बच्चा एक कोरी स्लेट की भाँति होता है। इस कोरी या स्लेट पर हम कुछ भी लिख सकते हैं। बचपन में बच्चे अनुकरण प्रिय होते हैं। वे जैसा देखते हैं, सुनते हैं, वैसा ही करने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं। बचपन में बच्चे के व्यक्तिगत और व्यक्तित्व का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है। अर्थात जीवन के पूरे विकास का तिहाई विकास बचपन में ही पूर्ण हो जाता है। बचपन के प्रथम ढाई वर्षों में बालक के शरीर और मस्तिष्क की गति सर्वाधिक होती है परन्तु इस आयु में बालक अपने घर में ही रहता है तथा जाने-अनजाने घर की संस्कृति और पर्यावरण को आत्मसात करने लगता है। बचपन के शेष तीन वर्ष अर्थात छः वर्ष की आयु तक बालक

P.T.O

हाथ-पैरों के उपयोग में नवीन कौशल अर्जित करता है। वह आत्मनिर्भर बन जाता है। अतः बचपन के समय में बालक विभिन्न क्रियाकलापों में समन्वय स्थापित करने लगता है।

* बचपन की विशेषताएँ *

(1) बालक की माँसपेशियों में वृद्धि होती है। अर्थात् उसका शारीरिक विकास होता

(2) बालक में सीखने के साथ ही भाषा का भी विकास होता है।

(3) सोचने-विचारने की बौद्धिक क्षमता का विकास

(4) बचपन में बालक जिन संस्कारों को ग्रहण कर लेता है, वे स्थायी हो जाते हैं।

* जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत —

डॉ० जीन पियाजे (1896–1980) एक स्विस मनोवैज्ञानिक थे और मूल रूप से एक प्राणी विज्ञान के विद्वान थे। उनके कार्यों ने उन्हें एक मनोवैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्धि दिलाई थी। पियाजे ने बुद्धि के विषय में अपना तर्क दिया कि बुद्धि जन्मजात नहीं होती है। इन्होंने इस पूर्व में प्रचलित धारणा का कि बुद्धि जन्मजात होती है।

P.T.O

Scanned with OKEN Scanner

का खण्डन किया। जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है वैसे वैसे उसका कार्य क्षेत्र भी बढ़ता है और बुद्धि का विकास संभव होता है। प्रारंभ में बच्चा केवल सरल सम्प्रत्ययों को ही सीखता है और-जैसे बालक की आयु बढ़ती है तो उसका अनुभव भी बढ़ता है। पहले और वह अपनी बुद्धि से जटिल सम्प्रत्यय निर्माण का सिद्धांत भी कहा है।

संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के पद :-

अपने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में पियाजे दो पदों का उपयोग करते हैं। संगठन और अनुकूलन हालांकि इन पदों के अलावा भी पियाजे ने कुछ अन्य पदों का प्रयोग अपने संज्ञानात्मक विकास में किया है।

(i) अनुकूलन (Adaptation)
(ii) समजन (Adjustment)

पियाजे ने अनुकूलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को दो उप-प्रक्रियाओं में बाँटा है —

(i) आत्मसातकरण (Assimilations)
(ii) समंजन (Accommodation)

* संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ :-

पियाजे के अनुसार जैसे-जैसे संज्ञानात्मक विकास बढ़ता है वैसे-वैसे अवस्थाएँ भी परिवर्तित होती रहती हैं। किसी विशेष अवस्था

P.T.O

में बालक के समस्त जिन विचारों व्यवहारों के संगठन से एक सेट यानि समुच्चय तैयार होता है। जिसे जिन पियाजे स्कीमा कहते है। इन स्कीमाओं के विकास में बालक के अनुभव व परिपक्वता पर निर्भर करता है। बालक के संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएँ होती है।

* जिन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएं निम्नलिखित है। –

(i) संवेदी पेशीय अवस्था या इन्द्रिय गतिक अवस्था (sensory motor stage)

(ii) पूर्व संक्रिया अवस्था (pre-operational stage)

(iii) मूर्त-संक्रिया अवस्था (concrete operational stag)

(iv) औपचारिक संक्रिया अवस्था (stage of formal operation)

conclusion :– उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है कि बच्चों के विकास की सारी अवस्थाओं में बच्चों के मानसिक विकास का अवधारणा को संहिमित करता है। जिन पियाजे के अनुसार बच्चे में धीरे-धीरे बुद्धि का विकास होता है और वह समय के साथ बढ़ता है और जीवन भर चलता रहता है।

Suggestion – Piaget stage with Example explain.

End

NAME :- Tunji Prakash

ROLL NO :- 220032

SUBJECT :- Course 1 (Childhood and Growing up)

CLASS :- B.Ed-I F.M :- 16

DATE :- 28/02/23 TIME :- 40 min

15/16

Q. Define the concept of childhood and Explain 'Jean Piaget Cognitive development Theory.

Ans:-

Childhood is a stage of life that encompasses the years from infancy to adolescence. It is a time of growth, development and exploration. During childhood, Individuals, undergo significant Physical, Cognitive, and socio-emotional changes that shape their understanding of the world and their place in it.

Jean Piaget's Cognitive development theory Provides a framework for understanding how children's thinking and understanding evolve as they Progress through different stages of development. Piaget belived that children are active learners who actively construct their knowledge through interactions with their environment.

Meaning

According to Piaget, childhood is a crucial period for cognitive development. Piaget believed that children actively construct their understanding of the world through their

interaction and experiences. He proposed that children progress through distinct stages of cognitive development, each characterized by unique ways of thinking and understanding.

Piaget also introduced the term 'schemas' that are mental process or structure that we use to organise and interpret information about the world. They help us make sense of our experiences and guide our thinking and behaviour. Schemas are like mental templets that we develop based on our interactions.

'Schemas' are mental frameworks that children use to organise and interpret infor-mation, helping them make sense of the world and facilitating their cognitive development.

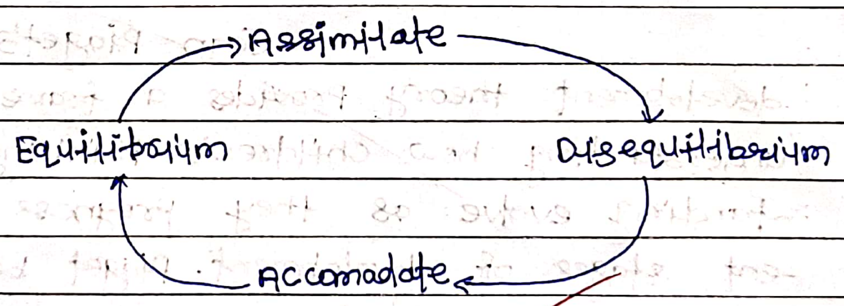

DEFINITION

"The mental process by which external or internal input is transformed, reduced, elaborated, stored, recovered, and used.

— According to Neisser.

• cognition is the mental processes relating to the input and storage of information and how that information and how that information and how that information is then used to guide behaviour.

— According to Cambridge University.

Piaget's theory consist of four distinct stages of cognitive development :-

I. Sensorimotor stage (Birth to 2 years)
II. Pre operational stage (2 to 7 years)
III. Concrete operational stage (7 to 11 years)
IV. Formal operational stage.

I. Sensorimotor stage :-

The first stage is the sensorimotor stage, and during this stage, the infant focuses on physical sensations and on learning to co-ordinate their body.

II. Pre operational stage :-

Piaget's second stage of intellectual development is the preoperational stage. It takes place b/w 2 and 7 years. At the beginning of this stage, the child does not use operations, so the thinking is influenced by the way things appear rather than logical reasoning.

Scanned with OKEN Scanner

III. Concrete operational stage :

By the beginning of the concrete operational stage, the child can use operations (a set of logical rules) so they can conserve quantities, realize that people see the world in a different way and demonstrate improvement in inclusion tasks. Children still have difficulties with abstract thinking.

IV. Formal operational stage :

The formal operational period begins at about age 11. As adolescents enter this stage, they gain the ability to combine and classify items in a more sophisticated way, and the capacity for higher-order reasoning.

Piaget's theory of cognitive development is a valuable and helpful guide to teacher in order to use in classrooms. using this theory in a classroom, teachers and students can get benefit in several ways Such as this theory helps teacher to assess the current level of the students and guid them in order to gain the new information

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD. 2010
Samastipur
Mathurapur

Name- Nitish kumar
Course- B.Ed -I year
Session- 2022-24
Roll no- 220016 (Sec-'A')
Date- 28.02.2023 [Subject:- course-I]

14/16

Q. बाल्यावस्था की अवधारणा को स्पष्ट करें और जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त की व्याख्या करें।

Ans → <u>बाल्यावस्था</u> :-
बाल्यावस्था को कई वर्गों में बाँटा गया है, यह अवस्था सामान्यतः 2 वर्ष से 12 वर्ष तक की होती है। यह अवस्था बच्चों के शारीरिक विकास तथा मानसिक विकास का अत्यंत लचीला समय होता है। यह अवस्था मनुष्य का स्वर्णिम अवस्था होता है।

<u>बाल्यावस्था के प्रकार</u> :-
(i) पूर्व-बाल्यावस्था (2-6 वर्ष)
(ii) उत्तर-बाल्यावस्था (6-12 वर्ष)

(i) <u>पूर्व-बाल्यावस्था</u> :-
यह अवस्था 2 वर्ष से 6 वर्ष की अवस्था होती है इस समय बालक समाजीकरण प्रक्रिया में पूरी तरह संलिप्त होता है। इस अवस्था में बच्चों में अनुकरण करने की क्षमता विकसित होती है एवं वह अपने माता-पिता, बड़ो एवं आस-पास से भी

सीखता है।

- इस अवस्था को मनोवैज्ञानिकों के द्वारा 'टोली की अवस्था' भी कहा गया है।

(ii) <u>उत्तर-बाल्यावस्था</u> :-

यह अवस्था 6 वर्ष से 12 वर्ष की अवस्था होती है इस अवस्था में बालक स्कूल जाना प्रारंभ कर देते हैं एवं उन्हें समाजीकरण का दूसरा कारक/संस्था स्कूल में सीखने को मौका मिलता है। यहाँ बालक नये-नये दोस्त भी बनाते हैं और जैसे को तैसा प्रवृत्ति भी इसी अवस्था में देखने को मिलती है।

- कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बाल्यावस्था को तीन भाग में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं :-

ⓐ पूर्व बाल्यावस्था
ⓑ मध्य बाल्यावस्था
ⓒ उत्तर बाल्यावस्था

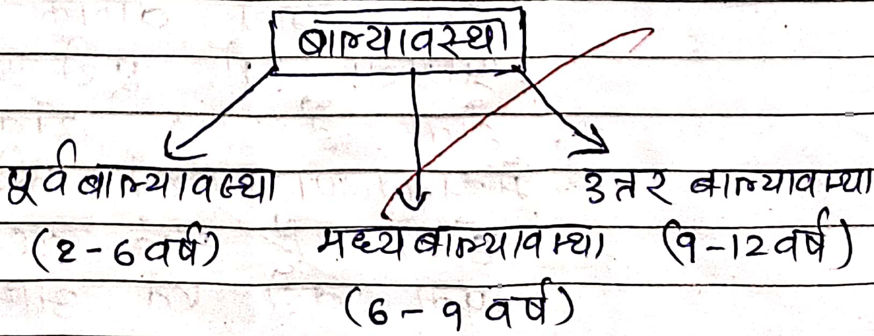

Scanned with OKEN Scanner

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत :-

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार भागों में बाँटा :-

(i) संवेदी गामक अवस्था
(sensory moter stage)

(ii) पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था
(Pre- operational stage)

(iii) मूर्त - संक्रियात्मक अवस्था
(concrete Operational stage)

(iv) अमूर्त - संक्रियात्मक अवस्था
(formal operational stage)

(I) संवेदी गामक अवस्था :-

यह अवस्था जन्म से लेकर 2 वर्ष तक की अवस्था होती है। इस अवस्था में बच्चे सहज क्रियाये करना सीखता है। अपने ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ध्वनि स्पर्श आदि को महसूस करता है।

(ii) पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था :-

यह अवस्था 2 वर्ष से लेकर 7 वर्ष की अवस्था होती है। इस अवस्था में बालक अनुकरण करके अपना ज्ञान अर्जित

करता है। इसी अवस्था में बालक चिन्हों को समझने लगता है। जैसे गेंद की आकार गोल कहने पर समझ लेता है।

(iii) मूर्त- संक्रियात्मक अवस्था :-

यह अवस्था 7-वर्ष से 12 वर्ष तक की अवस्था होती है। इस अवस्था में बालकों में दो घटनाओं के बीच समानता तथा विभिन्नता करने में सक्षम होने लगता है। इसी अवस्था से बालक तर्क करना शुरु कर देते हैं।

(iv) अमूर्त- संक्रियात्मक अवस्था :-

इस अवस्था को औपचारिक अवस्था भी कहते हैं। इस अवस्था का आयु वर्ग 12 वर्ष से अधिक होता है। इस अवस्था में बालक तार्किक चिंतन, अवास्तविकता तथा वास्तविकता में समझ आ जाता है एवं बालक में कल्पना शक्ति का विकास होता है।

इसी चारों अवस्था से बालकों का विकास होता है एवं वे अपने- आप को समाजीकरण से जोड़ पाते हैं एवं समाज से जुड़ पाते हैं। साथ ही समाज में अपनी अलग पहचान के लिए कार्य करते हैं तथा सफल भी होते हैं।

Maulana Mazharul Haque ... College
ESTD 2010
Mathurapur

Name - Nikhil Kumar
Course - B.Ed I Year
Session - 2022-24
Roll no - 220049 Sec - A
Date - 28.02.2003
Subject - Course - 1

14/16
07/03/23

Q.1. Define the concept of childhood and Explain 'Jean Pioget' Cognitive Development theory.
बाल्यावस्था की अवधारणा को स्पष्ट करें और जिन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत की व्याख्या करें।

Ans → बाल्यावस्था (Childhood) बालकों की वह अवस्था है जिसमें छात्रों की स्मरण चेतना का विकास होता है। बाल्यावस्था को 6 से 12 वर्ष तक माना जाता है, जिसमें छात्र नवीन वस्तुओं के संबंध में जानने हेतु जिज्ञासु होते हैं।

इस अवस्था में छात्रों का सही ढंग से मार्गदर्शन की बहुत आवश्यकता है।

<u>बाल्यावस्था</u>

यह अवस्था शैशवावस्था के बाद कि अवस्था है। इस अवस्था में बालक शैशवावस्था से विकास की प्रक्रिया को पूरी कर इस अवस्था में पहुँचते हैं। यह अवस्था छात्रों के व्यक्तित्व एवं

Haque Teac.
ESTD.2010
Samastipur
Mathurapur

चरित्र निर्माण की अवस्था होती है, इसलिए कई मनोवैज्ञानिक इस अवस्था को निर्माणकारी अवस्था भी मानते हैं।

यह अवस्था 6 से 12 वर्ष की आयु में होती है। इसके अन्तर्गत इस अवस्था को दो भागों में विभाजित किया गया है, अर्थात् 6-9 वर्ष की अवस्था को पूर्व - बाल्यावस्था एवं 9-12 के वर्ष को उत्तर - बाल्यावस्था के रूप में विभाजित किया गया है।

बाल्यावस्था की विशेषताएँ :-

1. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational stage) - मूर्त संक्रियात्मक अवस्था वह है जिसमें छात्र उसी के बारे में चिन्तन करते हैं, जिन्हें वह अपनी आँखों के सामने देखते हैं।

2. खेल अवस्था (Gaming stage) - इस अवस्था को खेल का अवस्था इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इस अवस्था में बालक का मन बहुत चंचल होता है। इस अवस्था में लगभग 95 प्रतिशत बालक खेलने में अपनी रूची प्रकट करते हैं।

3. निर्माणकारी अवस्था (formative stage) - इस अवस्था को निर्माणकारी अवस्था इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह अवस्था छात्रों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण करती है।

Scanned with OKEN Scanner

4. सामुदायिक अवस्था (Community stage) – इस अवस्था में बालक समूह में रहना पसंद करते है।

5. संवेदनशीलता (Sensitivity) – संवेदनशीलता अर्थात् इस अवस्था में बालक किसी कार्य को करने हेतु अधिक उत्तेजित एवं विश्वसनीय योग्य है।

6. चिन्तन (Concerns) – इस अवस्था में बालक चिंतनशील हो जाते है, अर्थात् सही गलत की पहचान करने लग जाते है।

जीन प्याजे ने व्यापक स्तर पर संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन किया। पियाजे के अनुसार, बालक द्वारा अर्जित ज्ञान के भण्डार का स्वरूप विकास की प्रत्येक अवस्था में बदलता है और परिमार्जित होता रहता है। पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धांत को विकासात्मक सिद्धांत भी कहा जाता है। चूँकि उसके अनुसार, बालक के भीतर का संज्ञान अनेक अवस्थाओं से होकर गुजरता है।

संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाएँ –

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभाजित किया है –

* (I) संवेदिक पेशीय अवस्था (Sensory Motor) – जन्म से लेकर 2 वर्ष तक

(ii) पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational) :- 2 से 7 वर्ष

(iii) मूर्त - संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational) :- 7 से 12 वर्ष

(iv) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational) :- 12 से 15 वर्ष

(i) संवेदी, पेशीय अवस्था

जन्म से लेकर 2 वर्ष तक

इस अवस्था में बालक केवल अपनी संवेदनाओं और शारीरिक क्रियाओं की सहायता से ज्ञान अर्जित करता है।

(ii) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था

2 से 7 वर्ष की अवस्था

इस अवस्था में बालक स्वकेन्द्रित व स्वार्थी न होकर दूसरों के सम्पर्क से ज्ञान अर्जित करता है।

(iii) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

7 से 12 वर्ष

इस वर्ष में बालक विद्यालय जाना प्रारंभ कर देता है, एवं वस्तुओं एवं घटनाओं के बीच समानता, भिन्नता समझने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

(iv) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था

12 से 15 वर्ष तक

इस अवस्था की विशेषताएँ निम्न है —

* तार्किक चिन्तन की क्षमता का विकास
* समस्या समाधान की क्षमता का विकास
* परिकल्पना विकसित करने की क्षमता का विकास
* विसंगतियों के संबंध में विचार करने की क्षमता का विकास

Suggestion Conclusion write

Scanned with OKEN Scanner

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College, ESTD. 2010, Samastipur, Mathurapur

Name – RUPESH KUMAR
Roll No. – 220048
Class – B.Ed-1st yr. Section – 'A'
Session – 2022-24 Subject – 'Course-I'
Date – 28/02/23

13/16 28/02/23

Q. बाल्यवस्था की अवधारणा को स्पष्ट करे और जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत की व्याख्या करे।

Ans → बाल्यवस्था वास्तव मे मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है। इस अवधि को मासूमियत, भेद्यता और विकास की अवधि माना जाता है, इस दौरान बच्चों को उनकी शारीरिक और भावनात्मक अपरिपक्वता के कारण वयस्कों की सुरक्षा और देखभाल की आवश्यकता होती है। यह एक समाजिक संरचना है।

बाल्यवस्था को आमतौर पर या तो विकास की एक प्राकृतिक जैविक अवस्था या एक आधुनिक विचार या अविष्कार माना जाता है। इसे आमतौर पर पूर्व विद्यालयी या विद्यालयी अवधि के रूप मे जाना जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

बाल्यावस्था की परिभाषाएँ

"बाल्यावस्था को 'जीवन का अनोखा' काल है। वास्तव में माता - पिता के लिए बाल विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है।"

⇒ कोल व ब्रूस

"बाल्यावस्था मिथ्या परिपक्वता का काल है।"

⇒ रॉस

"बाल्यावस्था जीवन की निर्माणकारी एवं काम की प्रसुप्तावस्था है।"

⇒ सिगमंड फ्रायड

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत :-

जिन पियाजे की संज्ञानात्मक सिद्धांत को विकासात्मक सिद्धांत भी कहा जाता है। क्योंकि बालक के भीतर संज्ञान का विकास अनेक अवस्थाओं से होकर गुजरता है।

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभाजित किया है:-

i) संवेदिक पेशीय अवस्था (Sensory Motor)
ii) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)
iii) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational)
iv) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational)

Scanned with OKEN Scanner

संवेदी पेशिय अवस्था

यह अवस्था जन्म से 2 वर्ष की उम्र तक माना जाता है। इस अवस्था में बालक अपनी संवेदी क्रियाओं के द्वारा अनुभव करता है। इस चरण में बच्चे के स्थायित्व विकास होता है।

इस अवस्था को छः उप-अवस्थाओं में बाँटा गया है:-

i) सहज क्रियाओं की अवस्था (जन्म से 30 दिन तक)
ii) प्रमुख वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था (1 माह से 3 माह तक)
iii) गौण वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था (4 से 6 माह)
iv) गौण स्कीमेटा की समन्वय की अवस्था (7 से 10 माह)
v) ~~तीत्तृतीय~~ वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था (11 से 18 माह)
vi) मानसिक सहयोग द्वारा नये साधनों की खोज की अवस्था (18 से 24 माह)

पूर्व - संक्रियात्मक अवस्था

यह अवस्था 2 वर्ष से 7 वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था में बालक स्वकेंद्रित व स्वार्थी न होकर दूसरों के संपर्क से ज्ञान अर्जित करता है। वह खेल, अनुकरण, चित्र-निर्माण तथा भाषा के माध्यम से वस्तुओं के संबंध में अपनी जानकारी बढ़ाता है

Scanned with OKEN Scanner

इस अवस्था को दो भागों में बाँटा गया है -
i) पूर्व सम्प्रत्यात्मक काल (2-4 वर्ष)
ii) अंत: प्रज्ञक काल (4-7 वर्ष)

मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

यह अवस्था 7 वर्ष से 14 वर्ष तक मानी जाती है। इसमें बालक में वस्तुओं एवं घटनाओं के बीच समानता, भिन्नता, समझने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था

यह अवस्था 12 वर्ष से आरंभ मानी जाती है। इसमें बालक में तार्किक चिंतन की क्षमता का विकास और समस्या समाधान की क्षमता का विकास होता है। बालक वास्तविक अनुभवों को काल्पनिक परिस्थितियों में ढालने की क्षमता का विकास हो जाता है। इस अवस्था में बालक में सही-गलत की क्षमता का विकास हो जाता है।

उपर्युक्त अवधारणाओं से हम बालक के विभिन्न अवस्थाओं में उसके विकास से संबंधित चरणों का पता चलता है। इसके माध्यम से हम बालक की मनोदशा को समझ कर उसके विकास की नींव देकर उसके सर्वांगिक विकास में सहायक सिद्ध होता है।

Scanned with OKEN Scanner

Maulana Mazharul Haque Teachers' Training College
ESTD. 2010
Samastipur
Mathurapur

Name :- Abhinash Kumar Singh
Roll No :- 220001
Class :- B.Ed.   Section :- A
Session :- 2022-2024
Subject :- Course-1
Course Name :- Childhood And Growing up
Date :- 28 February 2023.

Question :- बाल्यावस्था की अवधारणा को स्पष्ट करें और जिन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या करें।

Answer :- बाल्यावस्था व्यक्ति के जीवन की वह महत्वपूर्ण अवधि है जो जन्म से बचपन तक की होती है। यह समय उसके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस अवधि में बच्चा सीखने की क्षमताएं तेजी से विकसित करता है और उसे अपने आत्म-मूल्य की पहचान होती है। बाल्यावस्था का समय खेलने, अध्ययन करने और सामाजिक संबंध बनाने का होता है, जो उसके सामाजिक और आत्मिक विकास को बढ़ावा देते हैं। इस

अवधि में परिवार, शिक्षक और समाज का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है, जो बच्चे को सही मार्ग पर रखने में मदद करता है। बाल्यावस्था का समय व्यक्ति के भविष्य की नींव रखता है और उसे समर्पित, उत्साही और समझदार बनाता है।

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास—

जीन पियाजे एक श्रेष्ठ मनोविज्ञानी ने अपने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के माध्यम से बच्चों के मानसिक और भौतिक विकास को समझाने का प्रयास किया। जीन पियाजे ने अपने विद्वता के क्षेत्र में अपने अद्वितीय और मूलभूत सिद्धांतों के लिये पहचान प्राप्त की है, जिन्होंने संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में नई दृष्टिकोण प्रदान किया है।

पियाजे ने अपना सिद्धांत चार मुख्य चरणों में विभाजित किया - संविकास, संज्ञान, संवेदन और संगणन।

प्रथम चरण "संविकास" में बच्चा

अपने शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का विकास करता है, जो उसके बुद्धिमत्ता की नींव रखता है। इस चरण में बच्चे को अपनी सामाजिक, भौतिक और बौद्धिक क्षमताओं को समझाने में मदद करने के लिए अनुभव करने का भी अवसर मिलता है।

दूसरा चरण "संज्ञान" मे बच्चा अपने आसपास की दुनिया को समझने का प्रयास करता है। यहाँ उसे अपनी शिक्षा, सामाजिक योजनाओं और विचारों को सुलझाने का समय मिलता है।

तीसरा चरण "संवेदन" में बच्चा अपनी भावनाओं को समझता है और अपनी भावनाओं के साथ कैसे बदल जाता है। इस चरण में वह अपने संवेदनशीलता का अनुभव करता है और अपनी भावनाओं को समर्थन देने के लिये आत्म-प्राधिकृति बढ़ाता है।

आखिरी चरण "संगणन" मे वह अपने विचारों को अधिग्रहण करता है और अधिक

अभिज्ञान और अनुसंधान में रुचि बढ़ाने का अवसर देता है, जिससे उसका मानसिक विकास और सामाजिक योजना सुधारती है।

पियाजे का सिद्धांत हमें बच्चों के मानसिक विकास के गहरे सिद्धांतों को समझने और समर्थन करने का एक विशेष तरीके से प्रदान करता है, जिससे वे समाज में सकारात्मक रूप से योगदान कर सकते हैं।

पियाजे का यह सिद्धांत हमें बच्चों के सोचने और समझने के प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है और उनके विकास में कैसे उत्कृष्टता बढ़ा सकती है।

12/16

इस सिद्धांत के माध्यम से पियाजे ने बच्चों के मानसिक विकास को गहराई से समझाया है और इसने शिक्षा और परिवार में बच्चों के सही से विकास को समर्थन करने के लिये मार्गदर्शन प्रदान किया है।

Suggestion - stage with example